सम्पादक की कलम से

एहसास

ए– एतबार, ह– हकीकत, स– साकार(शाश्वत), स– सत्य।

एहसास का पूर्ण अर्थ होता है एहसास हकीकत का जो शाश्वत सत्य है। एहसास प्रकृति की अमूक भाषा है जो बगैर शब्द के अपनी गुणात्मक खुशबू प्रकृति में फैला देता है। अच्छा एहसास जीवन का आनंद है। एहसास सभी को होता है। एहसास से ही सहयोगी और विरोधी गुणों को पहचाना जाता है। जीवन में प्रकृति के जिस सम्पर्क से अच्छा लगता है वह आनंद का कारण बनता है। जिसे एहसास से ही जाना जा सकता है। अच्छा एहसास जीवन की एक उमंग है। जब जीवन में प्रकृति से कोई विरोधी गुण सम्पर्क में आता है तो उसका एहसास अच्छा नहीं होता है। एहसास सिर्फ मानव को ही नहीं प्रकृति के समस्त जीव जगत को होता है। जीवन निर्माण प्रकृति का अपना एहसास है पर जीवन निर्माण के बाद प्रत्येक जीव को अपना एहसास होने लगता है।

प्रकृति हर क्षण परिवर्तनशील है। इस परिवर्तन को एहसास से ही जाना जाता है। एहजसास चखे हुए स्वाद की प्राकृतिक भाषा है। एहसास से ही प्रकृति अपने भाव व्यक्त करती है। एहसास प्रकृति की वह परिभाषा है जिसके बाद नए गुणों का सृजन होता है। एहसास से ही अपने पराए के भावों की जानकारी मिलती है। जब अपना कोई दूर होता है उसकी भावना की जानकारी एहसास से ही होती है। यदि उसके उपर कोई परेशानी होती है तो उसकी भी जानकारी एहसास से ही होती है। यदि अपना कोई विरोधी हानि पहुंचाने की योजना बनाता है तो उसकी भी जानकारी एहसास के माध्यम से ही होती है। एहसास से जीव जगत की भावना को पहचाना जा सकता है। एहसास सिर्फ मानव को ही नहीं होता है बल्कि सभी जीव पदार्थ को होता है। मानव के अतिरिक्त अन्य जीव एहसास के ही माध्यम से सहयोगी और विरोधी गुणों की पहचान करते है। भोजन या अन्य जीवों से सम्पर्क अच्छे एहसास के बाद ही करते हैं। यदि एहसास अच्छा नहीं होता है तो उस विषय से दूर रहते हैं। ये जीव एहसास रूपी कला से अपना जीवन जीते हैं। पदार्थ में भी एहसास होता है और इसी एहसास से प्रकृति में गुणात्मक परिवर्तन होता है। इसी परिवर्तन से ऋतुएं बदलती हैं। शब्द एक है **एहसास** पर यही जीव–जगत के निर्माण का केंद्र बिंदु होता है। मानव जीवन के पास जानकारी के अनेकों स्रोत होते हैं पर अन्य जीव जगत के पास एक ही स्रोत है और वह है एहसास। मानव जीवन अन्य स्रोतों के माध्यम से विषय की जानकारी प्राप्त करना चाहता है। जिसके कारण से एहसास फीका पड़ा रहता है। जिसके कारण से विषय की सही जानकारी नहीं मिल पाती है। लोगों द्वारा बताए गए अनुभवों से बहुत सी जानकारियां मिलती है पर पर्याप्त नहीं होती है। एहसास के माध्यम से ही प्रकृति के स्वभाव की पूर्ण जानकारी मिल पाती है। एहसास के माध्यम से स्वभाव की सही जानकार मिल सके इसके लिए शांत स्वभाव का होना आवश्यक होता है। मन शांत करके किसी भी विषय के स्वभाव को जाना जा सकता है। जागृत अवस्था में मन विषयों में उलझाा रहता है जिसके कारण से विषय का स्पष्ट एहसास नहीं हो पाता है। सोते समय अथवा ध्यान के समय मन शांत रहता है। इस समय मन की गति प्रकृति की गति के साथ मिल जाती है। जिसके परिणामस्वरूप जीवन से संबंधित घटनाएं दिखती है जिसका एहसास होता है। इस एहसास के माध्यम से प्रकृति जीवन जीने के तरीको के लिए कुछ निर्देश देती है। इन तरीकों को पहचान कर जीवन को सुखद बनाया जा सकता है। देखे गए विषय को शांत मन से पहचानने पर उसके अर्थ का भाव मिलने लगता है।

एहसास शरीर के माध्यम से होता है। किसी जीव की शारीरिक रचना उसकी आवश्यकता पूर्ति के अनुसार होती है। शारीरिक रचना का केंद्र बिंदु आत्मा होती है। ऐसी ही रचना पदार्थों में भी होती है। इस रचना के माध्यम से पदार्थ अपने से संबंधित पदार्थ को अपनी तरफ खींचकर अपना विस्तार करते हैं। और प्रकृति का एहसास करके अपने गुणों को प्रकृति में छोड़ते हैं जो प्रकृति निर्माण में सहायक होता है। जीवन में एहसास की प्रक्रिया छूने से, शब्द से, गंध से , मौसम परिवर्तन से, पदार्थ के संपर्क में आने से, खाने से, देखने के साथ–साथ अनेकों प्रकार से होता है। इन प्रकारों के माध्यम से जब विषय का संपर्क जब शरीर से होता है तो विषयात्मक गुण अनेकों चक्रों से गुजरता हुआ आत्मा तक पहुंचता है। इस प्रक्रिया में शरीर के अंदर रासायनिक परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन से गुणात्मकता का एहसास शरीर को होने लगता है। जो आत्मा से गुजरता हुआ मस्तिष्क तक जाता है। जहां मन इन संकेतों को पहचानकर क्रियाशील हो जाता है और उस विषय पर विचार करने लगता है जो भावना में परिवर्तित हो जाता है। विषय भावना में परिवर्तित होने के बाद उस गुण की उर्जा प्रकृति में निकल जाती है। जो विषय को पूर्ण करने के लिए क्रियाशील हो जाती है। इस प्रकार अपनी उर्जा और दूसरे पक्ष की उर्जा में एक संघर्ष होता है। जिसकी भावना प्रबल होती है प्रकृति में उसी का निर्माण हो पाता है। इस तरह एहसास के माध्यम से प्रकृति में गुणात्मक निर्माण का विस्तार होता रहता है।

एहसास प्रकृति का निर्माण है। एहसास को अच्छा बनाकर प्रकृति को सुगंधित करने के साथ–साथ जीवन को खुशहाल बनाया जा सकता है। ऐसा करने के लिए विषय्य की पहचान करनी चाहिए। शरीर के अंदर आने वाला विषय सुखद एहसास देगा या दुखद। यदि सुखद एहसास देने वाला विषय है तो उसे आगे बढ़ने दें और यदि दुखद एहसास देने वाला विषय है तो उसे वहीं रोक दें। अपने मन को किसी अन्य विषय की तरफ ले जाएं अथवा अपने इष्ट का ध्यान करने लगें। ऐसा करने से दुखद एहसास देने वाला विषय रुक जाएगा। इस प्रकार अपने हर पल के एहसास को सुखद बनाकर खुद को आनंदित करते हुए प्रकृति को सुगंधित करें। ❑

सम्पादक